उ० — हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की एक लम्बी परम्परा रही है जो अनौपचारिक इतिहास लेखन जिसमें भक्तमाल, कविमाला, कालिदास हजारा के योगदान से आरंभ हुई थी तथा औपचारिक इतिहास लेखन जिसमें 'गार्सा द तासी', शिव सिंह सेंगर, ग्रियर्सन तथा मिश्र बंधुओं के योगदान से विकसित हुई।

साहित्येतिहास लेखन परम्परा में सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का रहा है। उन्होंने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सुव्यवस्थित इतिहास लिखकर इतिहास लेखन की परम्परा में एक नये युग और नयी चेतना की शुरुआत की। आचार्य शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास नामक ग्रंथ पहले 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी में रचनाकार - चयन की गहरी दृष्टि थी

आचार्य शुक्ल के साहित्येतिहास लेखन की प्रमुख विशेषताएं यह है कि उन्होंने इसे जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब माना है।

विशेषताएं — स्पष्ट और विकसित लेखन — शुक्ल जी का मानना है कि प्रत्येक देश का साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब है तथा चित्तवृत्तियों के बदलने से साहित्य भी बदल जाता है। इनके बदलने के पर्याप्त राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक कारण होते हैं।

प्रत्यक्षवादी इतिहास बोध — उन्होंने इतिहास के लेखन में प्रत्यक्षवादी सिद्धान्त को अपनाया है जिसके अन्तर्गत किसी कार्य की व्याख्या निश्चित व वस्तुनिष्ठ कारणों के आधार पर किया जाता है।

- आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। ——

- आचार्य शुक्ल की दृष्टि कवियों एवं साहित्यकारों के जीवन चरित्र के स्थान पर उनकी रचनाओं की विशेषता बताना तथा आलोचना करना रही।

- कवियों के काल निरूपण में आधुनिक समालोचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है।

- उन्होंने हिन्दी साहित्य के चार काल खण्ड - वीरगाथाकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल के विभिन्न भक्ति रीति और आधुनिक काल को नाना शाखाओं, धाराओं और उपविभागों में विभक्त किया। सरलता - निश्चयात्मकता और स्पष्टता के कारण उक्त काल विभाजन बहुत समय तक मान्य रहा।

- अनेक परिसीमाओं के बाद भी हिन्दी साहित्येतिहास परम्परा में शुक्ल जी का इतिहास भाल के पत्थर के समान है इसमें अत्यन्त व्यापक सूक्ष्म दृष्टि, विकासवादी दृष्टिकोण, विशद विवेचन व विश्लेषण तथा तर्कानुमत निष्कर्ष स्पष्ट मिलते हैं। आचार्य शुक्ल ने ही रखी आज के हिन्दी साहित्य के विशाल भवन की सुदृढ़ नींव

उनकी इस विशेषता के कारण उन्होंने साहित्य को चार कालों में विभाजित किया – ~~वीरगाथा~~ आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल।

आचार्य शुक्ल ने वीरगाथाकाल नामकरण किया है आदिकाल नामकरण हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का दिया हुआ है।

रचना का मूल्यांकन – शुक्ल जी ने जनता की चित्तवृत्ति के साथ-साथ साहित्य का सम्बन्ध जोड़ते हुए उसके क्रमिक विकास और परिवर्तन का आलेख प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त उसमें विशेष कवियों के काव्यगुणों व उनके महत्व का भी उदाहरण विवेचन किया है। शुक्ल जी ने इसी कारण तुलसी को लोकमंगल का कवि तथा सूरदास को लोकरंजन का कवि माना है।

वास्तव में, आचार्य शुक्ल ने इतिहासकार की तथ्यपरक दृष्टि की अपेक्षा साहित्यालोचक की गहरी और पारदर्शी दृष्टि को प्रमुखता दी। यही अद्भुत मूल्यांकन की क्षमता ही उनके इतिहास की प्राण शक्ति का पुंज है। इस परंपरा में आगे चलकर हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी जैसे लेखकों के साहित्येतिहास का आधार तैयार किया जो आगे रामकुमार वर्मा, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा और परिमार्जित तथा परिष्कृत किया गया।

(Q10) रीतिकालीन कवियों की श्रृंगार-चेतना के साहित्य-बोध का सोदाहरण विवेचना कीजिए।

(2024)

रीतिकालीन कवियों की श्रृंगारिकता में सामान्य रूप से इंद्रिय दमनजन्य कुंठाहीनता, शारीरिक सुख की साधना, अनेक प्रेमजन्य विलासिता, रूपलिप्सा, भोगेच्छा, नारी के प्रति सामन्तीय दृष्टि तथा गार्हस्थिकता के गुणदोषों के रहते हुए ऐसा कामना है जो काव्यशास्त्रीय नियमों के घेरे में बंद रहकर भी साधारण पाठक को रस, दशा के लिए आत्मविभोर कर सकती है।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को श्रृंगारकाल कहा है इसलिए इस युग में मैं श्रृंगार से ओत-प्रोत रचनाओं की अधिकता मिलती है क्योंकि श्रृंगार की प्रवृत्ति प्रायः हर कवि में मिलती है।

इस काल के ~~प्रथम~~ सर्वप्रथम नाम केशवदास की रचनाएं रसिकप्रिया, नखशिख एवं शिखनख। रसिकप्रिया में ~~का~~ श्रृंगार के रसराजत्व के कारण स्वाभाविक रूप से श्रृंगार का सर्वाधिक वर्णन किया है ~~सख~~ ~~एवं~~ तथा नखशिख एवं शिखनख में मानव देह के सौंदर्य वर्णन क्रम नख से आरंभ होकर शिख तक जाता है।

इसी तरह पद्माकर ~~के~~ द्वारा रचित प्रसंग जैसे: —

विलासितापूर्ण उन्मुक्त प्रेम की अभिव्यक्ति तथा नारी के प्रति सामंतीय दृष्टि के होते हुए भी रीतिकाव्य में गार्हस्थिक प्रेम की व्यापक स्वीकृति देखने को मिलती है।
मतिराम — "होहि आपनो भौन तुम, भौन कौन के जात"
या, ते धन जे बुजराज आवें गृहकाज करें अरु लाज संभारे आप।
इस प्रकार के स्वकीया प्रेम की प्रवृत्ति प्रत्येक कवि की रचनाओं में है।

गार्हस्थ्य जीवन का चित्रण —

मतिराम, बिहारी, देव, पद्माकर जैसे कवियों ने स्वकीया और परकीया नायिकाओं के माध्यम से गार्हस्थ्य जीवन का वर्णन किया है।
स्वकीया नायिका का चित्रण घर आंगन की मर्यादा और शील संयम के साथ किया गया है।

बिहारी की पंक्ति है — गोरस चाहत फिरत हौ, गोरस चाहत नाहिं।
तीज के पर्व पर नायिका के मानसिक उल्लास — बाम झूलें उर में, उरोजनि में दाम झूले
श्याम झूलें प्यारी की अनियारी अंखियन में।

पद्माकर की नायिका अपने नायक के गुण का कथन करती हुई कहती है —
छलिया छबीलो छैल छूवै चलो गयो।
नायिका के मानसिक अवसाद का वर्णन करते हुए देव ने लिखा —
साथ में रातियां नाथ उन्हें
हम हाथ में चाहत चार चूरी हैं।
स्वकीया के माध्यम से पतिव्रता के गुणों की चर्चा सुन्दरदास —
"पति ही सूं प्रेम होय, पति ही सूं नेम होय,
पति ही सूं जग्य जोग, पति ही है रस भोग,
पति ही सूं मिटे सोग, पति ही को जस है...
इसी प्रकार मतिराम ने युवती के पति के विदेश से आने पर, उसे अपने पति से मिलने की बेचैनी, पति के आने की सूचना से नायिका के भीतर उद्वेलित होने वाले अदृश्य आनन्द, नायक का आगमन कि परिजनों के साथ बैठना आदि स्थिति को निम्न पंक्ति द्वारा सरलता से गार्हस्थ्य जीवन के मर्यादित मनोविज्ञान को दर्शाया है —
आए बिदेस ते प्रानप्रिया मतिराम अनंद बढ़ाय अलेखें।
लोगन सों मिलि आंगन बैठि घरी ही घरी सिगरो घर देखें।।
भीतर भौन के द्वार खड़ी सुकुमारि तिया तन कंप बिसेखें।
घूंघट को पट ओट दिए पट ओट किए पिय को मुख देखें।।

निष्कर्ष — रीतिकालीन कवियों ने श्रृंगार रस के माध्यम से न केवल प्रेम और सौंदर्य का चित्रण किया है बल्कि पारिवारिक और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर किया है, उनका गार्हस्थ्य बोध तत्कालीन समाज और संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Don't Write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें।)

"गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनीजन है,
चाँदनी है, चिक है, चिराग़न की माला
कहै पद्माकर ज्यौं गजक गिजा है सजी,
सेज है, सुराही है, सुरा है, और प्याला है।"

बिहारी के श्रृंगार वर्णन में 'देह' की केन्द्रीय भूमिका है। रीतिकाल का दरबारी माहौल ऐसे श्रृंगार की ही परिस्थितियाँ तैयार करता है—

"अंग अंग नग जगमगात, दीपसिखा सी देह,
दिया बुझाय ह्वै रहै, बड़ौ उजेरो गेह।"

~~इसी प्रकार [illegible]~~ इसी तरह से श्रृंगार जैसे सहज भाव को गार्हस्थिक दायित्वों से मुक्त करने के साथ-साथ यहां जीवन का मूल उद्देश्य मान लिया गया, वह भी सभी विलास साधनों के ~~साधन~~साथ। कहीं-कहीं तो कविता भोग विलास की सामग्री ही नजर आने लगती है, तमाम शिल्प सौंदर्य के बावजूद कविता का महत्व सीमित कर देती है। उदाहरण—

"गदराने तन गोरटी, ऐपन आड़ लिलार।
हठ्यौ दै इठलाई, दृग करै गँवारि सुमार।"

ताज बेगम — 1700 सवैया — की रचना की है (ललित छन्द)
इनको मीराबाई कहा जाता है।

ताज ने स्पष्टता और निर्भिकता के साथ कृष्ण भक्ति की लोकप्रियता की

नंद के कुमार कुर्बान तेरी सूरत पे
हूँ तो मुगलानी हिंदुआनी की राह में......

— कहत है ताज कृष्ण सों पैजकर
वृंदावन छोड़ अब कितहूं न जाऊंगी
वेही ~~कंजी~~ राधा रानी जू की
तुर्कनी ~~अब~~ बहाय नाम गोपिका ~~कहाऊंगी~~ कहाऊंगी।

भक्ति चेतना — कृष्ण के प्रति गहन प्रेम है।
समर्पण और अनुराग की भावना है।
रचनाओं में कृष्ण के बाल रूप, रासलीला, वृंदावन की सुन्दरता
और राधा कृष्ण के प्रेम का मार्मिक चित्रण है।

इनकी रचनाएं धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है।
इनकी भक्ति चेतना ने भारतीय संस्कृति और साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला है।

— (1) सुनो दिलजानी, मेरे दिल की कहानी, तेरे हाथ हूँ बिकानी, बदनामी भी सहूँगी मैं।
देव पूजा ठानी, तजे कलमा कुरान, मैं नमाज हूँ भुलानी तेरे गुनन गहूँगी मैं।
सांवला सलोना, सिरताज, सिर कुल्लेदार तेरे नेहदाह में निदाघ है दहूंगी मैं।
नन्द के कुमार कुर्बान तेरी सूरत पे हूँ तो मुगलानी, हिन्दुआनी है रहूँगी मैं।....

(2) छैल जो छबीला सब रंग में रंगीला
बड़ा चित का अड़ीला, वह देवतों से न्यारा है।
माल गले सोहै, नाक-मोती सेत जो है कान
कुण्डल मन मोहै, लाल मुकुट सिर धारा है।
दुष्टजन मारे, सब संत जो उबारे ताज
चित में निहारे प्रन प्रीति करन वारा है।
नंदजू को प्यारा, जिन कंस को पछारा,
वह वृंदावन वारा कृष्ण साहेब हमारा है।

प्रश्न कृष्णभक्त मुस्लिम कवयित्रियों की भक्ति-चेतना।

उत्तर भारतीय साहित्य में जहां रसखान और कुतुबन जैसे कवियों ने भक्ति को सांप्रदायिक सीमाओं से परे जाकर व्यक्त किया। इन कवयित्रियों की रचनाओं में कृष्ण के प्रति गहन प्रेम और समर्पण झलकता है, जो भक्ति आंदोलन की समावेशी प्रवृत्ति को दर्शाता है।

कृष्णभक्ति में मुस्लिम कवयित्रियों की चेतना-

* मध्यकालीन समाज में भक्ति आंदोलन ने स्त्रियों को धार्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता का मंच प्रदान किया। मीरा बाई जैसी ~~कृष्ण~~ कृष्णभक्त कवयित्री ने इस आंदोलन को दिशा दी।

* ताज बेगम, जो बादशाह अकबर की पत्नी थी, ने कृष्ण भक्ति को अपनाया। जैसे "हूं तो मुगलानी, हिन्दुआनी बन रहूंगी मैं"

* मुस्लिम कवयित्रियों के पदों में कृष्ण की छवि और उनके गुणों का वर्णन मिलता है। जैसे:- "छैल जो छबीला, सब रंग में रंगीला"।

भक्ति को धर्म से परे मानवीय प्रेम के रूप में प्रस्तुत किया। इनकी रचनाएं दर्शाती है कि भक्ति का मार्ग जाति और धर्म की सीमाओं से परे है। (रसखान और कुतुबन जैसी कवयित्रियों ने)

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है, "भक्ति का मार्ग हृदय का मार्ग है।" यह दृष्टिकोण आज भी साम्प्रदायिक सद्भावना को बढ़ावा देने का मार्ग प्रशस्त करता है।

Don't W anything marg (इस भा कुछ ना

anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखे)

प्रश्न रामविलास शर्मा की आलोचना - दृष्टि का सांस्कृतिक पक्ष।

उत्तर रामविलास शर्मा मार्क्सवादी दृष्टिकोण से साहित्य का विश्लेषण किया, जिसमें सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को प्रमुखता दी। ~~ए~~ उन्होंने भारतीय संस्कृति की गहराई को समझते हुए साहित्य को समाज के परिवर्तन का साधन माना। उनकी आलोचना में लोकतांत्रिक मूल्यों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की झलक मिलती है।

आलोचना दृष्टि का सांस्कृतिक पक्ष :-

* डॉ. रामविलास ने मार्क्सवाद तथा साहित्य में यथार्थवाद के महत्व को प्रतिपादित किया। जैसे - "गोदान" मे ग्रामीण जीवन की सच्चाई
* उन्होंने साहित्य को राजनीति, समाज और संस्कृति के व्यापक सवालों से जोड़ा। जैसे - "अपनी धरती अपने लोग"
* कबीर, तुलसी, भारतेंदु, प्रेमचन्द और निराला के माध्यम से हिन्दी के जातीय साहित्य का मूल्यांकन किया जैसे :- "रामचरितमानस" मे सामाजिक और धार्मिक परंपराओं का चित्रण

* भारतीय कला, संगीत, स्थापत्य, दर्शन आदि पर विस्तार से विचार किया।
* भारतीय दर्शन मे अद्वैत वेदांत की वैश्विक प्रासंगिकता को स्थापित किया। डॉ. रामविलास शर्मा स्वयं एक जीवित परंपरा ~~बन गए~~ के प्रतीक बने जिससे उनकी आलोचना दृष्टि ने हिंदी साहित्य मे नई दिशा प्रदान की, जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का समावेश था।

उत्तर सूक्ष्म है। कीवर्ड्स को स्पष्ट विस्तार देना तथा प्रत्येक बिन्दुओं को लाना अति आवश्यक है।

Don't Write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भाषा –

प्रयोगवादी कवि ने अपने विलक्षण स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति के कारण खड़ी बोली के व्याकरण-सम्मत रूप की अवहेलना की है। उदाहरणार्थ – रघुवीर सहाय ने लिखा –

शक्ति दो बल दे पिता।
एक दुख के भार से मन थकने आय
पैरों में कुली की सी लपकती चाल छटपटाय

"हम कुंज कुंज यमुना तीरे" में तीरे का प्रयोग बांग्ला के अनुसार है, खड़ी बोली के अनुसार नहीं। दमित वासनाओं और कुंठाओं के वर्णनाग्रह से इनकी भाषा में ग्राम्य का आ जाना स्वाभाविक है। भाषा में नवीन प्रयोग की हठवादिता से इन्होंने अपनी कविता की भाषा में भूगोल, विज्ञान, दर्शन, मनोविश्लेषणशास्त्र एवं बाज़ारू बोली के शब्दों का प्रयोग करने में संकोच नहीं किया है। कहीं-कहीं पर इनके द्वारा जान बूझ कर शब्द का रूप तोड़ा-मोड़ा है जो कि समीचीन नहीं है। भाषा, भाव शैली और छन्द आदि के क्षेत्र में सुरुचि सम्पन्नता के स्थान पर अनपेक्षित विलक्षणता को प्रश्रय देने के कारण इनकी कविता का अपना ढांचा भी आधुनिक सांस्कृतिक ढाँचे के समान चरमरा उठा है —.

प्रयोगवादी कविता की भाषा

प्रयोगवादी कविता की भाषा ने हिन्दी साहित्य मे एक नया मोड़ प्रस्तुत किया। जिसमे सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' और गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे कवियों का महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन कवियों ने पारंपरिक भाषा की सीमाओं को तोड़ते हुए, अभिव्यक्ति के नए रूपों और शैलियों को अपनाया, जिससे कविता अधिक व्यक्तिगत और प्रयोगशील बनी।

प्रयोगवादी कविता की भाषा ~~छायावाद~~ छायावाद और ~~प्रयोग~~ प्रगतिवाद से भिन्न है। छायावाद मे कोमलता और सुकुमारता थी, जबकि प्रयोगवाद मे बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ। ~~प्रति~~ प्रयोगवादी कवियों ने भाषा मे सहजता और सरलता को महत्व दिया। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, उनकी भाषा मे पारदर्शिता और संप्रेषणीयता अधिक थी

प्रयोगवादी कवियों ~~ने~~ ने शब्द प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया। उनकी भाषा मे गेयता और आलंकारिता कम थी। प्रयोगवादी कवि

margin
(इस भाग में
कुछ ना लिखें)

मध्यवर्गीय जीवन की जड़ता और मानसिक संघर्ष को बौद्धिकता के साथ व्याख्यायित करते हैं। उनकी कविताओं में यथार्थवादी दृष्टिकोण होता है, जो भावुकता के स्थान पर ठोस बौद्धिकता को स्वीकार करता है।

प्रयोगवादी कविता की भाषा में नवीनता और सृजनात्मकता का विशेष महत्व है। यह परंपरागत ढाँचे को तोड़कर स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है। अज्ञेय ने कहा था, "कविताओं को बंधनों से मुक्त होना चाहिए", आगे बढ़ने के लिए हमें भाषा में नए प्रयोगों को अपनाना चाहिए ताकि साहित्यिक अभिव्यक्ति और भी समृद्ध हो सके।

भक्ति रंगमंच का स्वरूप

इसका उद्देश्य - भक्ति, ईश्वर प्रेम के प्रति समर्पण की भावना को व्यक्त करना है, इसके माध्यम से भगवान राम, कृष्ण, शिव आदि दुर्गा, काली जैसी देवियों की लीलाओं का मनुष्य द्वारा मंचन कर मनोरंजन के साथ ईश्वर भक्ति का प्रचार-प्रसार करना -

- स्थानीय भाषा व संस्कृति के अनुरूप प्रस्तुत करने से अत्यन्त लोकप्रिय है -

- भक्ति रंगमंच अपने समय के साथ-साथ आज भी मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन है, यह सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, उनकी रक्षा करता है यह हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं को उनकी पहचान के साथ बनाये रखने में मदद करता है।

- धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक मान्यताओं को बनाये रखने के साथ-साथ अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की विजय, लोकमंगल की भावना, तथा राष्ट्रीयता की भावना से जनमानस को बोध कराना ही उसका स्वरूप है।

प्रश्न भक्ति रंगमंच का स्वरूप

उत्तर

भक्ति रंगमंच का स्वरूप भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भक्ति आंदोलन के दौरान विकसित, इस रंगमंच ने कबीर, मीराबाई और तुलसीदास जैसे संतों के विचारों को मंच पर प्रस्तुत किया। यह रंगमंच धार्मिक और सामाजिक संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बना

यह रंगमंच भक्ति आंदोलन के दौरान विकसित हुआ और इसमें प्रमुख रूप से राम और ~~श्याम~~ कृष्ण की लीलाओं का मंचन किया जाता है।

रासलीला वल्लभाचार्य और हितहरिवंश जैसे संतों ने सोलहवीं शताब्दी में इसकी शुरुआत की। "रासलीला में गोपियों का कृष्ण के प्रति अनुराग और भक्ति का प्रदर्शन होता"

रामलीला गोस्वामी तुलसीदास को रामलीला की अभिनय परंपरा का प्रतिष्ठापक माना जाता है। इसमें राम के चरित्र और रामकथा का आधारित नाट्य शैली है।

For Stud
083496

Don't Write anything this margin (इस भाग मे कुछ ना लिखे)

इसी प्रकार जात्रा पूर्वी भारत का एक लोकप्रिय लोकनाट्य रूप है। इसके माध्यम से धार्मिक मान्यता मान्यताओं का प्रचार-प्रसार किया जाता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था, "कला समाज का दर्पण होता है।" भारतीय रंगमंच का स्वरूप भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसने भारतीय समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ किया और लोक संस्कृति को समृद्ध किया।

Don't Write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखे।)

प्र.1 विद्यापति की गंगा भक्ति

उत्तर

मैथिली साहित्य के महान कवि विद्यापति, जिन्हें 'मैथिल कोकिल' कहा जाता है। ~~जो विद्यापति ने~~ उन्होंने गंगा को केवल एक नदी नहीं, बल्कि मोक्षदायिनी देवी के रूप में चित्रित किया। उनके काव्य में गंगा की महिमा और पवित्रता का वर्णन मिलता है, जो भक्ति साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रामचन्द्र शुक्ल ने विद्यापति की भक्ति को गंगा के प्रति उनकी आत्मीयता का प्रतीक माना है।

विद्यापति की रचनाओं में भक्ति का विशेष स्थान है। उनकी ~~रचनाओं~~ रचनाएं जैसे 'शैव सर्वस्वसार', 'गंगा वाक्यावली', दुर्गा और सीता आदि भक्ति से ओतप्रोत हैं। जैसे- "हे मां पतित पावनि गंगे, तुम्हारे तट पर बैठकर मैंने संसार का अपूर्व सुख प्राप्त किया।"

विद्यापति की गंगा स्तुति की कुछ पंक्तियाँ लिखें। सम्भव हो तो मैथिली में लिखी गंगा स्तुति रचनाएं लिखने का प्रयास कर सकते हैं।

विद्यापति की भक्ति में दैन्य, समर्पण और अनन्यता का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। उन्होंने अपने पदों में एक सच्चे

Don't W
anything
marg
(इस आ
कुछ ना लि

भक्त के हृदय का निवेदन दिखाई देता है।

विद्यापति की गंगा भक्ति और उनकी भक्ति भावना का गहन विश्लेषण किया जा सकता है। उनके अनुसार, गंगा का जल पवित्र और जीवनदायिनी है। उनके भक्ति भाव को समझते हुए, हमें पर्यावरण संरक्षण और नदियों की स्वच्छता के प्रति जागरूक होना चाहिए, जिससे गंगा की पवित्रता बनी रहे।